छोटी सी प्रयास, कुंआ से बदलाव

गांव– हरिजन टोला

पंचायत–टक्षिण तेलुआ

प्रखण्ड – नौतन

जिला – पo चम्पारण (बिहार)

हरिजन टोला–एक नजर में

हरिजन टोला एक दलित समुदाय की बस्ती है। यह गांव 150 वर्ष पुराना है। यहॉ के रहने वाले दलित समुदाय जो बाहरी गांव से आये थे। इस क्षेत्र में बड़ें–बड़े भूस्वमी हैं जिनके पास 100 एकड़ से भी अधिक जोत वाली भूमि हैं। ये भू–स्वामी अपने खेतों में काम कराने के लिए मजदूर के रूप में बसायें गये थे। आज यह गांव दक्षिण तेल्हुआ पंचायत का मुख्य हिस्सा है। जहॉ पर 130 परिवार के 363 महिला एवं 398 पुरूष एक साथ रहते हैं जिसमें चमार (अO जाO) जाति के 98 परिवार,दुसाध जाति के 25 परिवार, जुलाहा मुसलमान जाति के 02 परिवार तथा हाजाम हिन्दू जाति के 05 परिवार जो आपसी भाईचारे के साथ रहते हैं। इसमें से चमार, जुलाहा एवं हाजाम (नाई) तीनों जातियॉ पचपहुनिया के रूप में जजमानि व्यवस्था(सेवा प्रदान करने वाला समुदाय) का हिस्सा रही है। इस गांव के अगल–बगल में राजपुत, भूमिहार एवं ब्रह्मण जैसी सर्वण जातियां है जो बड़े–बड़े भू–स्वामी हैं।

कुंआ का इतिहास

हरिजन टोला गांव के रहने वाले स्व0 कोकिल राम ने एक कुंआ अपने घर के सामने बनावाई थी। 1954 में जब गांव के रहने वाले कुल 30 परिवार थे जो दूसरे गांव से आये थे। ये सभी परिवार के लोग उॅची जाति के गांव में अवस्थित कुंए से पानी लाकर पीते थे। जहॉ से पानी लाने पर नीची जाति को छुआछत की भावना से प्रताडित होना पडता था। स्वo कोकिल राम ऐसे व्यक्ति थे जिनको एक भी वंश एवं संतान नहीं था। गांव वाले कहने लगे कि कुआ बनवाने से आदमी को पुन्य एवं धर्माथ मिलता है। कोकिल राम के पास पैसा भी था। फलतः गांव वाले की प्रेरणा से कोकिल राम ने 1954 में अपने नीजी पैसा 600/ रुपया में कुंआ बनवायां ,जो गरमजरूवा सरकारी जमिन पर बना। 1954 से लेकर 1993 तक कुंआ चलता रहा। परिवार भी बढकर 30 से 60 के आसपास हो गया तथा लोग पानी पीते रहे। 1993 में एक भयंकर बाढ आया जिसमें कुआ से उपर 3 फीट पानी बहने लगा। बाढ का पानी कुंआ में पूरी तरह घुस गया। लोगों को समझ में आया कि कुंआ का पानी पूरा गंदा व दुषित हो गया है। इसलिए लोग उस पानी को पीना बंद कर दिये। इसी बीच 1980 में सरकारी योजना से पंचायत द्वारा 5 चापाकल 100 फीट वाला। पांच स्थानों पर लगया गया था। सभी गांव वाले उसी चापाकल से पानी पीने लगे। फलतः कुंआ पूरी तरह बंद हो गया।

गांव में चापाकल का प्रवेश

ये सभी चापाकल बन्धु पासवान, भरथरीराम, कारीराम, भोला राम एवं फागु राम के दरवाजे पर लगाये गये थे। 1980 में नया–नया चापाकल गांव में घुसा था लोग उत्साह में थें कि अब बिना परिश्रम किये आसानी से पानी निकल

जाता है । लोग पानी पीने लगे। किन्तु गांव में चापाकल के आने से पेट में गैस्टीक ,ल्यूकोरिया, भूख कम लगना आदि शुरू होने लगा। जब तक लोग कुंआ का पानी पीते थे तबतक कोई बिमारी पेट से संबंधित नहीं था ।

वर्षा पानी से कुंआ पानी की ओर बढ.ते कदम

मेघ पईन अभियान के साथी जब इस गांव में पहलीबार 2007 में आये तो देखे कि लोगों की आर्थिक स्थिति खराब है। लोगों का अधिक पैसा बिमारी पर खर्च हो रहा है। जो भी मेहनत मजदूरी का पैसा आ रहा वह सब बिमारी पर खर्च हो रहा है। गांव वालों के साथ प्रत्येक सप्ताह बैठकें शुरू होती रही। 2007 में कोकिल राम के कुंए के पास एक सामुदायिक पल्ली लगायी गई जिससे गांव के सभी 130 परिवार के लोगों पहली बार र्वषा का पानी पिया।

बंद कुंआ को चालू करने की सोच

गांव की लगातार बैठकों में यही सवाल आता रहा कि वर्षा के समय तो हमलोग वर्षा का पानी सकते हैं लेकिन बाद में तो फिर वहीं गदां चापाकल के पानी को पीते रहते हैं । इसका स्थायी निदान चाहिए। फिर गांव वालों के साथ अमरूद के पत्ती से दो अलग–अलग शीशे के ग्लास में बंद कुंआ के
पानी तथा सरकारी चापाकल के पानी का जांच किया गया। कचरा से भरा हुआ उपयोग नहीं होने वाला कुंआ का पानी का रंग सफेद रह गया तथा सरकारी चापाकल का पानी का रंग बैगनी हो गया। गांव वाले आश्चर्यचकित (गंभिरता के साथ)होकर आयरन रहित कुंआ के पानी को देखने लगे तथा सोचने लगे।

कुंआ चालू करने की एक प्रकिया

हरिजन टोला गांव के सभी 130 परिवार के लोगों की एक सभा नवम्बर 2007 में हुई तथा गांव वालों ने कुंआ को पुनः जीवित करने के लिए संकल्प लिया। इस कार्य को समपन्न कराने की जिम्मेवारी गांव विकास समिति को दिया गया। गांव विकास समिति की बैठक में एक 7 लोगों की टीम बनाई गई जो गांव के प्रत्येक परिवार से नगद चन्दा इक्कट्ठा करेगी। कुंआ की मरम्मति कार्य के लिए 10,500/ का एक बजट भी अनुमानित तैयार हुआ जिसको गांव विकास समिति एवं अभियान के कार्यकर्त्ता बनाये। जिसमें से 7000/अभियान द्वारा सहयोग करने एवं शेष 3500 गांव वालों के द्वारा सहयोग करने की सहमति हुई।

कुंआ की मरम्मती एंव उड.ाही –सफाई की पहल

कुआ जब मार्च 2008 में तैयार हुआ तो उस समय तक 10,775/रुपया का लागत आया था। जिसमें सिर्फ 45 परिवार से 3,775 रुपया नगद एवं श्रमदान के रूप में सहयोग रहा था। कुआ के चारों तरफ 5 फीट का फर्श (जमीन पर कुंआ के चारों तरफ सिमेंट से बना सतह)बनाया गया तथा फर्श से उपर 3 फीट का दीवाल उठाया गया । कुंआ का उडाही एवं सफाई कार्य 7 बार किया गया था। जब पहली बार कुंआ का सफाई किया गया तो लोगों के अनुमान से 2 क्विन्टल कचरा एवं 1 क्विन्टल माटी–बालू को निकाला गया था। पानी सड गया था बदबू दे रहा था। लोग नाक दाब कर खडे थें। लेकिन दूबारा सफाई के समय भी बचा हुआ कचरा एवं मिट्ट बालू को निकाला गया था। कुंआ का पानी जल तारा कीट से तीन बार जॉच करके प्रमाणिक पानी बनाया गया था।

कुंआ के स्वच्छ जल का उपयोग शुरू

12/4/08 से दिसम्बर 2008 तक कुंआ के पानी को सभी परिवार वाले पूरा–पूरा उपयोग पीने में एवं खाना बनाने तथा स्नान करने में किये। पानी इतना ज्यादा कुंआ के पास गिरना प्रारम्भ हो गया कि बगल में रास्ते पर जल जमाव होने लगा। तो फिर कुंआ ने एक नई समस्या को पैदा कर दिया कि जल निकास कैसे बनाया जाय। इसपर लोग सोचने लगे। कुंआ के पास सडक पर पानी गिरने से, रास्ता बंद हो जाने से, कुंआ से फिर धीरें–धीरे कम पानी खपत होने लगा । आपस में घर वालों एवं पानी निकालने एवं गिराने वालों के बीच तनाव की स्थिति भी आने लगी। धीरे – धीरे 130 परिवार से घटकर 8–10 परिवार ही सिर्फ कुंआ के पानी से जुडे रह गये है।

कुंआ का प्रबंधन

गांव विकास समिति एवं गांव के लोगों ने पंचायत पर दबाव बनाया तथा पंचायत के दवादस योजना की 1,59,000रु सरकारी धन द्वारा कुंआ से 550 फीट लम्बा नाला बनवाया है। वर्षा के बाद एक आम सभा सितम्बर में हुई जिसमें गांव वालों ने कुंआ के पानी की गुणवत्ता पर चिंतन किया जिसमें समझ बनाया गया कि कुंआ का स्वच्छ पानी जब से बन्द हुआ है तब से फिर गैस्टीक और पेट से संबंधित रोग हो गया है। इसलिए कुंआ को फिर से सफाई और उडाहि कर के सभी परिवार पानी पिना चालू करेंगे। अक्टुबर 2009 के दुसरे सप्ताह में कुंआ की सफाई एवं उडाहि कराने के लिए गांव के सभी लोगों ने र्निणय लिया है। गांव विकास समिति और गांव के सभी 130 परिवार के लोंगों ने यह प्रस्ताव पास किया हैं कि अब जल जमाव की समस्या खत्म हो गई है तथा नाला भी बन गया है इसलिए अक्टुबर के दुसरे सप्ताह में सफाई एवं उडाहि कर दिया जायेगा तथा सभी परिवार के लोग कुंआ के पानी का भरपुर उपयोग करने लगेगे।

कुंआ जल का प्रभाव

मई 2009 की एक घटना है कि दक्षिण तेलुहा पंचायत के पुर्व मुखिया रामचन्द्र सहनी के पेट में आचानक दर्द शुरू हो गया जिसे उनको आस्पताल ले जाने की तैयारी लोगो ने शुरू कर दिया था । तब तक अभियान के कार्यकर्त्ता भी वहॉ पहुचे । उनके सुझाव पर हरिजन टोला कुंआ से 2 लीटर पानी लाकर पिलाया गया तथा उनका पेट दर्द पानी पीने के 5 मीनट के बाद पुरी तरह ठिक हो गया । उपस्थीत 40 के आस–पास सभी लोगों ने उस कुंआ के पानी की खुबी के प्रति चर्चा शुरू कर दिया। जिस अगल–बगल के गांवों में कुंआ को चालू कराने के लिए मांग होने लगा है।

सरकारी पैसा कुंआ पर खर्चा– नाला निर्माण

टोला– हरिजन टोला

राजस्व गांव– तेल्हुआ

ग्राम पंचायत– दक्षिण तेल्हुआ

प्रखण्ड– नौतन

जिला– पश्चिम चम्पारण (बिहार)

गांव का इतिहास

17 वीं शताब्दी के आस–पास करीब 300 साल पूर्व उत्तर प्रदेश राज्य, बिहार के छपरा एवं सीवान जिले से चमार जाति के 3 परिवार, दुसाध जाति के 1 परिवार, नाई जाति के 1 परिवार, ब्रह्मण जाति के 1 परिवार तथा भूमिहार जाति के 1 परिवार सहित कुल 7 परिवार यहॉ के खाली पडे सरकारी गैरमजरूआ जमीन पर आकर बस गए। ये सभी जाति के परिवार अलग– अलग बाहरी क्षेत्रों से आकर बसे थे । ये सभी परिवार गंडक नदी की छोडी हुई धरा लालबेगी नदी के किनारे बस गए । इनका मकसद था कि नदी के किनारे अधिक उत्पादन योग्य भूमि से आय को बढाना। एक धार्मिक इतिहास के अनुसार यह बताया जाता है कि इस क्षेत्र

में मड़आहा मठ के साधु भक्तु बाबा ने एक यज्ञ किया था जिसमें कुंआ का पानी सुखने लगा था तो बाबा ने अपने तपोबल से गड़क नदी को हीं यहॉ बुला लिया ताकि सभी भक्त एवं संत पानी पी सकेगे । इसका उदाहरण आज भी लालबेगी नदी है जो बड़ी नदी गंडक की छोड़ी हुइ धारा है । अंग्रेजी सरकार द्वारा यहॉ के चमार (अ० जा०) एवं दुसाध (अ० जा०) को दान स्वरूप जमीनें दी गई थी ।

किन्तु इन परिवारों द्वारा मालगुजारी(टैक्स) आदा नहीं करने पर यहॉ के भूमिहार (स्वर्ण) जाति के द्वारा निलामी की गई जमीन को ले ली गई।

गांव की सामाजिक स्थिति :–

आज हरिजन समुदाय की एक बड़ी आबादी हो गई है । जिसमें चमार जाति (अ0 जा0) 98 परिवार, दुसाध जाति (अ ०जा ०)के 25 परिवार, जुलाहा (मुसलमान – अ० पि ०जा ०)के 02 परिवार तथा नाइ जाति (हिन्दू –अ० पि० जा०) के 05 परिवार मिलकर 130 परिवार एक समुदाय बनाकर रहते हैं । इनकी जनसंखया 761 है जिसमें महिला 363 एवं पुरूष 398 हैं । भूमिहार एवं ब्रहमण जैसी सवर्ण जातियॉ गांव के पूरब में अपनी अलग संस्कृति बनाकर तथा इन अछूत जातियों से दूरी बनाकर रहती है । इसलिए इस बस्ती को हरिजन टोला कहा जाता है ।गांव में 130 परिवार हैं, जो संयुक्त परिवार एव एकल परिवार के रूप में हैं । इंदिरा आवास योजना के तहत 130 परिवार को इंदिरा आवास तथा 12 परिवार को अधूरा गृह निर्माण योजना के तहत सरकारी राशि देकर पक्कें का घर बनाया गया । सभी परिवारों में फूस की

झोपडी 2–3 सबके पास भी है । 15 परिवार के लोगों को अभी भी इंदिरा आवास नही मिल पाया है जिसमें **शिवनाथ** ठाकुर, चुमन ठाकूर, सचितानन्द ठाकूर, कन्हैया ठाकूर, दीनानाथ ठाकूर, हरीलाल ठाकूर, शीत राम, बसंत राम, छठु पासवान , बन्धु पासवान , मोहन राम, विशुन राम, सुकट राम एवं संजय राम हैं गांव में पेयजल सुविधा के लिए 13 सरकारी चापाकल है जिनकी गहराइ 100 फीट तक है । 38 नीजी चापाकल है जिनकी गहराइ 25–46 फीट तक है । जल तारा कीट द्वारा पानी जॉच से यह बात सामने आई है कि यहॉ के चापाकल जल स्त्रोतों में आयरन, कोलीफार्म, पी एच एवं अमोनिया है जो असुरक्षित एवं मानक से अधिक पाया गया है। साथ हीं फ्लोराइड, कठोरता एवं कलोराइड सुरक्षित एवं मानक के अनुकूल पाये गयें हैं। ये स्थिति सरकारी एवं नीजी दोंनों तरह के चापाकलों में पाया गया है । इस गांव में 2 नीजी कुंआ है जो सरकारी गैरमजरूआ जमीन पर है। गांव के दो अलग–अलग व्यक्तियों द्वारा बनवाया गया है । जिसकी गहराई 35–45 फीट तक है । दोनों कुंआ बंद था किन्तु 01 कुंआ मेघ पईन अभियान द्वारा गांव के सहयोग से (कोकील राम के द्वारा बनवाया गया था)चालू कराया गया है जिसका पानी स्वच्छ एवं मानक के अनुरूप शुद्ध है ।

<u>गांव की अर्थिक स्थितिः–</u>

इस दलित बस्ती को मजदूरों का गांव कहा जाता हैं । यहॉ रहने वाले सभी परिवार दैनिक मजदूरी पर आश्रित है । जिसमें से 50 से अधिक महिलॉए 20 रूपये के दर से दैनिक कृषि मजदूर के रूप में 4 घंटे काम करती है । 40 से अधिक पुरूष मजदूर जो दैनिक कृषि मजदूर के रूप में 50 रूपयें की दर पर 4 घंटे प्रतिदिन काम करते हैं । प्रत्येक परिवार से एक या दो व्यक्ति बिहार के बाहर राज्यों में गांव से पलायन करके मजदूरी करते हैं, जिनकी संख्या लगभग 60 के आस–पास है । घर पर रहने वाले मजदूर अगल – बगल गांव में मजदूरी करने के लिए जाते हैं । गांव में 126 लालकार्डधारी हैं तथा 70 जॉब र्काडधारी हैं । सभी परिवार भूमिहीन हैं। किसी भी मजदूर को अभी तक नरेगा के तहत 100 दिन की जॉब नहीं मिल पाई है । गांव के बगल में एक सरकारी बुनियादी विधालय (गांधी जी की स्थापित रोजगारोन्मुखी शिक्षण के तहत) है जिसमें बुनियादी ज्ञान की सोंच ध्वस्त हो गई हैं । इस विधालय में सिर्फ सामान्य विधालय की औपचारिक पढाई दी जाती हैं । इस गांव के 150 बच्चे बुनियादी विधालय में पढने जाते हैं तथा बाकी बच्चे 50 के आस – पास विधालय छोडकर घर पर बकरी चराते हैं तथा कृषि मजदूर के रूप में काम करते हैं ।

<u>गांव की सांस्कृतिक स्थिति :–</u>

गांव में जब संध्या होता है तो दारू की दुकानें चलने लगती हैं । इस तरह की दारू दुकान को बीरबल राम, भूखल राम तथा योगी राम की पत्नी, करीमन राम, जयपतियां कुंअर, नन्दू राम तथा बन्धुराम रोज चलाते हैं । जिसको पीने के लिए हरिजन टोला गांव से बाहर के लोग भी आते हैं । चाहे वो उॅची जाति के हों या निम्न जाति के हों, पीते हैं । गांव के अंदर करीब 30 –35 आदमी प्रतिदिन 14 लीटर पाउच

वाला दारू करीब 700 रूपयें का पीतें हैं तथा स्प्रीट लगभग 10 लीटर 200 रूपये का पीते हैं । इस तरह प्रतिदिन गांव के अंदर रहने वाले लोग 900 रूपये का दारू पिने पर पैसा खर्च करतें हैं ।
गर्मी में ताड एवं खजूर के रस से बना ताडी करीब 100 लीटर को 60 –70 व्यक्ति प्रतिदिन 2 महीने तक पीते रहतें हैं जिसका कीमत लगभग 500 रूपया आता है ।इस तरह यह छोटा से टोला रोज दिन नशा में डूबा रहता है । साथ हीं इस गांव में दारू पिने वालें लोगों का अड्डा बना रहता है । एक तरफ नशें में लोग डूबे रहतें है तो दूसरी तरफ बिमारी में खोये रहते हैं । आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर है कि ये अपनी जिंदगी को भगवान भरोसे जीते है । गांव में झगडे एवं मारपीट रोज ब रोज होते रहते हैं ।

<u>स्वच्छ पेयजल के लिए प्रयास :–</u>

मेघ पईन अभियान ने पहली बार जब 2007 में गांव के लोगों के साथ काम शुरू किया तो देखा गया कि स्वच्छ पेयजल एक बडी समस्या है । सभी चापाकलों (सरकारी एवं नीजी)से आयरन वाला पानी निकल रहा है । चापाकल के पानी से कपडा पीला हो जा रहा है, वर्तन पीला हो जा रहा है तथा चापाकल के शेड पर भी पीलापन है। फिर अमरूद के पत्ते से पानी का जब जांच हुआ तो पाया गया कि चापाकल के पानी का रंग काला हो गया तथा उसी गांव के कोकिल राम का बंद कुंआ का पानी साफ रह गया। इस पर गांव वालों को एक संवेदना आई । फिर स्वच्छ पानी पर कार्य शुरू हुआ । गांव वालों के साथ लगातार संपर्क एवं बैठक में होने वाली चर्चा ने स्वच्छ पानी के लिए लोगों को एक साथ खडा कर दिया । 2007 एवं 2008 में बारिश के पूर्व तथा वर्षा के बाद के मौसम में चापाकल एवं बंद कुंए के जल स्त्रोतों की जॉच हुई । जिसमें यह बात सामने आई कि कुंआ का पानी चापाकल के पानी से अच्छा व पीने के अनुकूल हो सकता है ।

<u>स्वच्छ पेयजल का नमूना – कुंआ जल</u> :–

अभियान के प्रयास ने बंद कुंआ को चालू करने के लिए लोगों में एक सोच पैदा किया । फलतः – स्व कोकिल राम जो वर्तमान में चन्द्रीका राम के दरवाजे पर वाला कुंआ था, वह कचरे से भरा हुआ था। इसी कुंआ को चालू करने का एक फैसला गांव वालों ने लिया । कुंआ की मरम्मती, एवं सफाई – उड.ाही में गांव के लोगों ने चन्दा के रूप में नगद राशि तथा श्रम का दान देकर सहयोग किया। इसमें 3,775 रूपये गांव से तथा 7,000 रूपये अभियान के सहयोग से कुंआ पर खर्च किया गया । कुंए का सात बार उड.ाही – सफाई हुआ जिसमे 50 से अधिक लोगों ने श्रमदान कर सहयोग दिया । जिसका नगद श्रम शक्ति 25 रूपये की दर से 625 रूपये हुआ । प्रति उड.ाही एवं सफाई में 2–3 घंटे का समय लगता था

परिणामतः 12/04/2008 को कुंआ का सामूहिक रूप से पूजा –पाठ , मंत्रोउच्चारण एवं मधुर जल गीतों के साथ कुंआ जल का उद्घाटन हुआ । इस जल महोत्सव में 130 परिवार के करीब 400 से अधिक महिला – पुरूष – बच्चों नें भाग लिया। इसी दिन से सभी परिवार में पानी पीने की शुरूआत

1993 के बाद पहली बार शुरू हुई । लोगों में उत्साह था । एक नई उमंग एवं जोश थी । नई पीढी तो पहली बार ही कुंए के जल को पीया ।

कुंआ से पानी की निकासी ने जल जमाव की समस्या बनाईः–

पहली बार एक नये उत्साह ने गांव वालों को कुंआ से इतना जुड.ाव पैदा कर दिया कि लोग प्रतिदिन कुंआ के पानी को पीने लगे, कुंआ पर स्नान करने लगे, हाथ – पैर धोने लगे, चबुतरा पर कपड.ा साफ करने लगे । फलतः पानी का लगातार गिरना शुरू हो गया । कुंआ के पास से जल की निकासी नही होने से जल जमाव की समस्या पैदा हो गई। कुंआ के बाहर गिरने वाला पानी बगल के सड.क पर (दक्षिण में) जल जमाव की स्थिति पैदा कर दिया । फिर रास्ते से आने–जाने वालों के लिए एक समस्या हो गई । लोग रात में गिर जाते थें । आवागमन बंद हो गया । फिर रास्ते पर चलने वालों से तथा कुंआ पर पानी गिराने वालों से झगड.ा एवं मारपीट की स्थिति आ गई ।

जल जमाव से जल निकासी समस्या पर एक सोचः–

कुंआ के सामने लगातार जल जमाव से उबकर लोगों ने कुंआ के पानी को गिराने पर रोक लगा दी । फिर कुंआ के पानी को सिर्फ पीने में उपयोग होने लगा । अंत में कुंआ के पानी की जरूरत ने लोगों को जल जमाव से मुक्ति के लिए एक रास्ता खोजने पर मजबूर किया । अंततः गांव के स्तर पर एक आम सभा करने की तैयारी शुरू हुई।

गांव वालों ने ली नाला बनवाने का फैसला–एक प्रक्रिया :–

21:12:2008 को स्थानीय ग्राम पंचायत सदस्य श्री होसिला राम की अध्यक्षता में एक आमसभा की गई । जिसमें गांव के 40 से अधिक मुख्य व्यक्तियों ने भाग लिया । साथ हीं इस बैठक में पंचायत के दलपति, पूर्व मुख्या एवं मुखिया पति सहित अन्य ग्राम पंचायत सदस्यों ने भी भाग लिया । उपस्थित सदस्यों के साथ यह बैठक कुंआ के पास ही चन्द्रीका राम के दरवाजे के सामने हुआ जिसमें समस्या के प्रति गंभीरता के साथ चर्चा की गई। एक प्रस्ताव पारित किया गया कि कुंआ से एक नाला बनाया जाए जो अनुमानित 810 फीट का होगा। जो यह नाला कुंआ से होते हुए मुख्य सड.क के पास प्रेम राम के घर तक जाएगी । इस प्रस्ताव की एक प्रति को, ग्रम पंचायत द्वारा आहूत 26 जनवरी 2009 की ग्राम सभा में रखने का निर्णय लिया गया । अंततोगत्वा 26 जनवरी 2009 की पंचायत स्तरीय ग्रम सभा में नाला निर्मण के प्रस्ताव को पारित करा दिया गया । फिर इस प्रस्ताव पर ग्राम पंचायत कार्यकारणी की फरवरी 2009 की बैठक में काफी बहस एवं चर्चा के बाद अनुमोदित कर दिया गया ।फिर इस प्रस्ताव को जूनियर इंजिनियर के पास इस्टीमेट बनवाने के लिए भेजा गया ।

सरकारी द्वादस योजना से नाला निर्माणः–

नाला निर्माण के लिए 560 फीट का इस्टीमेट (मैप सहित बजट) बनकर तैयार हुआ । जिसमें कुंआ के चबुतरा से चारों ओर नाली तथा नाली को एक बडे. नाले से जोड.ते हुए प्रेम राम के घर के पास मुख्य सड.क के किनारे तक लाया गया । नालें की चौड.ाई 1 फीट तथा गहराई कुंए के पास 1 फीट एवं नाले के अंत छोर पर 3 फीट तक है । इसके निर्माण में कुल 1,59,000=00 रूपया सरकारी द्वादस योजना का खर्च हुआ है ।

<u>कुआ के नाला से लाभः–</u>

कुंआ से गिरने वाली पानी सड.क पर जाकर नाले से होती हुई निकल जा रही है । लोग बेहिचक खूब पानी गिराते है । कुंए के पानी का उपयोग पूरा – पूरा हो रहा है । नाला के बगल में अवस्थित सभी चापाकलों के पानी भी नाले में गिरते हैं । वर्षा के समय भी गांव से नाला का पानी आसानी से निकल जाता है । नाला निर्माण में रूकावट व स्लेप का लगना – नाला निर्माण की जिम्मेवारी स्थनीय ग्रामपंचायत सदस्य होसिला राम तथा ग्रव विकास समिति की देख रेख व निगरानी में कराई गई । जब नाला बन रहा था तो उसमें घटिया ईंट लग रहा था तो गांव विकास समिति ने रोका तथा बाद में फिर बढि.या ईंट व सीमेंट – बालू से काम होने लगा। नाला के सामने रामदुलारी देवी , जीतलाल राम, चन्द्रीका राम, नन्दू राम, बन्धुराम व फागु राम का घर था , जहॉ से नाले के उपर होकर दरवाजे से निकलना मुशकिल था । फिर गावं वालों के सुझाव पर नाले के उपर घर के सामने एक–एक स्लेप डाला गया ।

<u>नाले की सफाई में गांव वाले की भागीदारी :–</u>

जब –जब नाले में कचरा भर जाता है तो गांव विकास समिति की बैठक करके सामूहिक सफाई की जाती है। 25:6:09 को सामूहिक श्रमदान से पहली बार नाले की सफाई की गई जिसमें पूर्व मुखिया, पूर्व सरपंच , वर्त्तमान ग्रम पंचायत सदस्य, दलपति , गांव विकास समिति सदस्य, गांव के लोग व अभियान के साथियों ने मिलकर सफाई किया । फिर इससे प्रेरणा लेकर गांव वाले जिनके–जिनके_सामने नाला है वे स्वयं सफाई कार्य करते रहते हैं ।